चंद्रघंटा माता व्रत कथा

प्राचीन काल में देवों और असुरों के बीच एक लंबा युद्ध चला था। असुरों के स्वामी महिषासुर थे और देवताओं के स्वामी भगवान इंद्र देव थे। महिषासुर ने देवतालोक पर विजय प्राप्त की और इंद्र का सिंहासन प्राप्त किया और स्वर्ग पर शासन करना शुरू कर दिया। यह देखकर सभी देवी–देवता चिंतित हो गए और त्रिदेवों के पास गए।

देवताओं ने बताया कि महिषासुर ने इंद्र, सूर्य, चंद्र और वायु सहित अन्य देवताओं के सभी अधिकार छीन लिए हैं और देवता पृथ्वी पर विचरण कर रहे हैं। देवताओं की बात सुनकर ब्रह्मा, विष्णु और भगवान शिव बहुत क्रोधित हुए। क्रोध के कारण तीनों देवताओं के मुख से ऊर्जा उत्पन्न हुई और देवताओं के शरीर से निकली ऊर्जा भी उस ऊर्जा में मिल गई।

इसी ऊर्जा से दसों दिशाओं में व्याप्त होकर मां भगवती अवतरित हुई थीं। भगवान शंकर ने देवी को अपना त्रिशूल भेंट किया। भगवान विष्णु ने उन्हें चक्र भी भेंट किया। उसी प्रकार सभी देवताओं ने माता को अस्त्र–शस्त्र देकर दण्डित किया। इंद्र ने अपना वज्र और ऐरावत भी हाथी माता को भेंट किया। सूर्य ने सवारी के लिए अपनी ज्वाला, तलवार और सिंह प्रदान किया। देवी चंद्रघंटा ने युद्ध के मैदान में महिषासुर नामक राक्षस का वध किया।

pdfinbox.com